No. of Printed Pages : 4

MSK–003

स्नातकोत्तर कला उपाधि (एम. एस. के.)

सत्रांत परीक्षा

दिसम्बर, 2023

एम. एस. के.-003 : दर्शन : न्याय, वैशेषिक, वेदान्त, सांख्य और मीमांसा

समय : 3 घण्टे *अधिकतम अंक : 100*

नोट : *(i) सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।*

(ii) प्रश्न-पत्र ***तीन*** *खण्डों में विभाजित है। प्रत्येक खण्ड में दिए गए निर्देशानुसार ही प्रश्नों के उत्तर दीजिए।*

खण्ड—क

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 10×3=30

(क) न्याय दर्शन में ईश्वर की सिद्धि की विवेचना कीजिए।

अथवा

वेदान्तसार के अनुसार अधिकारी का क्या लक्षण है ? स्पष्ट कीजिए।

(ख) भारतीय दर्शनों के स्वरूप का वर्णन कीजिए।

अथवा

सांख्य योग दर्शन के प्रमुख सिद्धान्तों का निरूपण कीजिए।

(ग) तर्कसंग्रह की प्रतिपाद्य विषय-वस्तु पर प्रकाश डालिए।

अथवा

न्याय वैशेषिक का परिचय देते हुए उसकी आचार्य परम्परा पर विस्तृत नोट लिखिए।

खण्ड—ख

2. निम्नलिखित की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए : $10 \times 4 = 40$

(क) संयुक्तव्यवहारासाधारणां हेतुः संयोगः। सव द्रव्य वृत्तिः।

अथवा

असाधारणं कारणं करणम्। कार्यनियतपूर्ववृत्ति कारणम्। कार्य प्रागभाव प्रतियोगि।

(ख) सूक्ष्मशरीराणि सप्तदशावयवानि लिङ्ग शरीरराणि। अवयवास्तु ज्ञानेन्द्रियपञ्चकं बुद्धिमनसी कर्मेन्द्रियपञ्चकं वायुपञ्चकं चेति।

अथवा

आभ्यां महाप्रञ्चदुपहितचैतन्याभ्यां तत्ताय: पिण्डवदविविक्तं सदनुपहितं चैतन्यं 'सर्वं खल्विदं ब्रह्म' इति वाक्यस्य वाच्यं भवति विविक्तं सल्लक्ष्यमपि भवति। एवं च वस्तुन्यवस्त्वारोपो-ऽधयारोप: सामात्येन प्रदर्शित:।

(ग) इत्येष प्रकृतिकृतो महदादि विशेषभूत पर्यन्त:।
प्रतिपुरुषविमोक्षार्थं स्वार्थं इव परार्थ आरम्भ:॥

अथवा

अतिदूरात सामीप्यादिन्द्रियघातान्मनोऽनवस्थात्।
सौक्ष्म्याद व्यवधानादभिभवात्समान भिहाराच्च॥

(घ) प्राप्ते शरीरभेद चरितार्थत्वात् प्रधानविनिवृतौ।
ऐकान्तिकमात्यन्तिकमुभयं कैवल्यमाप्नोति॥

अथवा

वेदप्रतिपाद्यत्वे प्रयोजनवत्वे च सत्यर्थत्व धर्मत्वमिति धर्मलक्षणमपन्नम्।

खण्ड—ग

3. निम्नलिखित में से किन्हीं **पाँच** पर टिप्पणियाँ कीजिए : $5 \times 6 = 30$

(क) धर्म

(ख) विधि

(ग) निषेध

(घ) अपूर्वविधि

(ङ) प्रयोग विधि

(च) तुष्टि के नौ भेद

(छ) अर्थवाद